P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भारतीय समाज में महिला उद्यमशीलता की भूमिका

अमित मलिक
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
डी0ए0वी0 महाविद्यालय,
मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)
भारत

सारांश

भारतीय समाज में सैद्धान्तिक रूप से प्राचीन समय सें ही स्त्रियों की सामाजिक स्थिति ऊँची रही है परन्तु यदि व्यवहारिक दृष्टिकोण पर नजर डाले तो भारतीय समाज लम्बे समय तक पुरूष प्रधान समाज रहा है चाहे उत्पादन की क्रिया हो, प्रजनन, परिवार का प्रबन्ध या फिर बच्चों का समाजीकरण इन सभी क्रियाओं पर पुरूषों का एकाधिकार रहा है हालांकि यदि वर्तमान परिदृश्यों को देखा जाए तो स्त्रियों पर अत्याचार समाप्त तो नहीं हुए परन्तु कम हुए है तथा उनके स्वरूपों में परिवर्तन आ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की उद्यमशीलता में व्यापक प्रगति हुई है, इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी पुरूषों पर पूर्णतया निर्भर नहीं रही है। कामकाजी महिलाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है।

मुख्य शब्द : भारतीय समाज, ग्रामीण परिवेश, उद्यमशीलता।

प्रस्तावना

जहाँ परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं की सैद्धान्तिक प्रस्थिति ऊँची थी परन्तु उन पर पुरूषों के द्वारा विभिन्न अत्याचार किए जाते थे जैसे उन्हें पर्दे में रखना, शिक्षा से वंचित रखना तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु केवल पुरूषों पर उनको निर्भर रखना। यदि हम वर्तमान सामाजिक परिदृश्य पर नजर डालें तो अब प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वो शिक्षा प्राप्ति हो, महिलाओं के द्वारा रोजगार करना हो या फिर राजनीतिक सहभागिता हो महिलाओं की उद्यमशीलता में व्यवहारिक दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय समाज में महिलाओं की उद्यमशीलता की भूमिका का विश्लेषण करना है, कि किस प्रकार शिक्षा प्राप्ति, रोजगार करने तथा अन्य सामाजिक क्षेत्रों में महिलाओं की उद्यमशीलता का क्या स्तर है। इस अध्ययन के क्षेत्रीय कार्य हेतु सकौती गांव निकट गुरूकुल नारसन जिला हरिद्वार का चुनाव किया गया है।

भारत ही नहीं संसार के अधिकांश देशों में स्त्रियों की भूमिका को लेकर सिद्धान्त और व्यवहार के बीच एक बड़ा अन्तर देखने को मिलता है। पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रस्थिति और उससे जुड़ी भूमिकाओं पर पुरूषों का प्रभाव स्पष्टतया देखा जा सकता है। यह बात उन सभी जातियों तथा वर्गों के लिए सच है जिनकी प्रणाली सामन्तवादी विचारों से प्रभावित है। हमारा समाज मुख्यतः चार क्रियाओं से सम्बन्धित है। इन्हें उत्पादन की क्रिया, प्रजनन, परिवार का प्रबन्ध तथा बच्चों का समाजीकरण कहा गया है। व्यवहारिक रूप से भारतीय समाज में इन सभी क्रियाओं पर पुरूषों का ही एकाधिकार है। अधिकांश व्यक्ति स्त्रियों द्वारा नौकरी करने, उच्च शिक्षा ग्रहण करने अथवा परिवार के प्रबन्ध में हस्तक्षेप करने को न केवल सन्देह की दृष्टि से देखते है बल्कि इसे अपने अहम् के विरूद्ध भी मानते है। इक्कीसवी सदी के तथाकथित समतावादी समाज में भी स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों में अधिक कमी नहीं हुई है। यद्यपि इन अत्याचारों के रूप में परिवर्तन अवश्य हो गया है। इन दशाओं के बीच यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भारतीय समाज में समय–समय पर स्त्रियों की भूमिकाओं में किस प्रकार परिवर्तन हुए तथा वर्तमान युग के समताकारी मध्यों ने स्त्रियों की भूमिका को किस प्रकार प्रभावित किया है। स्त्रियों ने जो उद्यमशीलता पिछले 70 वर्षों में दिखायी है वह देखने लायक है और महिलाओं की उद्यमशीलता का समय पर प्रभाव देखा जा सकता है। शिक्षा के स्तर पर महिलाओं की उद्यमशीलता की बात की जाये तो उसमें व्यापक प्रगति हुई है। भारत में स्वतन्त्रता के समय जहाँ 1000 स्त्रियों में से केवल 54 स्त्रियाँ साक्षर थी वही सन् 2001 की जनगणना के अनुसार आज यह संख्या बढ़कर 654 हो गयी है। आज विभिन्न समूहों में पाँच करोड़ से भी अधिक

लड़कियाँ स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रही है। आज स्त्रियाँ अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पूर्णतया पुरूषों पर निर्भर नहीं है। शिक्षा की प्रगति तथा बदलती हुई मनोवृत्तियों के प्रभाव से अब सभी क्षेत्रों में उन कामकाजी महिलाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। सन् 2010 तक सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में महिलाओं का प्रतिशत 28 तक पहुँच गया है जबकि कम्प्यूटर सेवाओं में महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक है। उच्च स्तर की प्रशासनिक और पुलिस सेवाओं में भी स्त्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। सन् 2010 तथा सन् 2014 की आई0ए0एस0 परीक्षा में महिला द्वारा सर्वोच्च स्थान प्राप्त करना महिलाओं की उद्यमशीलता का प्रमाण है। केन्द्रीय पंचायती राज अधिनियम 1992 के अनुसार सभी राज्यों में ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत में विभिन्न श्रेणियों के 33 प्रतिशत स्थान स्त्रियों के लिए सुरक्षित है। वर्तमान परिवारों में श्रम–विभाजन का एक नया रूप देखने को मिलता है जिसमें पुरूषों का कार्य साधारणतया आजीविका उपार्जित करना है जबकि स्त्रियां एक अधिकार सम्पन्न गृहणी के रूप में परिवार का प्रबन्ध करती है। एकांकी परिवारों में वृद्धि होना भी अप्रत्यक्ष रूप से स्त्रियों के पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि होने को प्रमाणित करता है। आज महिलाऐं अनेकों सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध खड़ी होने लगी है। रूढ़िवादिता और कर्मकाण्डों का प्रभाव उनके ऊपर कम होने लगा है लेकिन उपरोक्त बदलती तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है वह है ग्रामीण भारतीय समाज। स्त्रियों की भूमिका में होने वाले अधिकांश परिवर्तन आज भी भारत के नगरीय जीवन से ही सम्बन्धित है। ग्रामीण समुदाय में शिक्षा की कमी तथा परम्परागत जीवन के कारण अधिकांश स्त्रियों का जीवन आज भी कुप्रभाओं तथा धार्मिक अन्धविश्वासों से प्रभावित है। ग्राम पंचायतों के 33 प्रतिशत स्थान उन स्त्रियों के लिए सुरक्षित हो जाने के कारण इस बात की सम्भावना बढ़ जाती है कि स्त्रियों की परिस्थिति में परिवर्तन के साथ उनकी भूमिकाएँ भी बदल जायेगी।

ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की उद्यमशीलता की भूमिका के अध्ययन के लिए सकौती, गुरूकुल, नारसन गाँव जिला हरिद्वार को चुना गया है। इस गाँव की जनसंख्या 2643 है जिनमें मतदाताओं की संख्या 1576 है। इन मतदाताओं में महिला मतदाताओं की संख्या 778 है। गुरूकुल नारसन एन0एच0 58 पर दिल्ली–हरिद्वार मार्ग पर स्थित है। गुरूकुल नारसन से सकौती गांव 2 किमी की दूरी पर है। सकौती गांव में अनेकों जातियों के लोग निवास करते हैं। जिनकी शिक्षा स्तर में भिन्नताऐं है। आयु समूह अलग–अलग है लेकिन अधिकतर महिलायें गृहणी है लेकिन घरेलू स्तर पर उनके पारिवारिक जीवन में अनेकों बदलाव देखे जा रहे है। गांव में महिलाओं की उद्यमशीलता की भूमिका के अध्ययन के लिए विभिन्न जातियों से विभिन्न आयु समूह की 50 महिलाओं को दैव निदर्शन के आधार पर चुना गया है। यह अध्ययन कार्य 01 मार्च 2016 से 25 मार्च 2016 तक सकौती गाँव में सम्पन्न किया गया है। इस अध्ययन कार्य में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसूची तथा साक्षात्कार व अवलोकन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

महिला उत्तरदाताओं से उनकी उद्यमशीलता की भूमिका के अध्ययन के लिए निम्न प्रश्न उठाये गये है–

1. उत्तरदाताओं का व्यवसाय क्या है?
2. क्या उत्तरदाताओं के पास एल0पी0जी0 गैस स्टोव है?
3. क्या उत्तरदाताओं का बैंक एकाउंट है?
4. उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर क्या है?
5. क्या आप अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के लिए पुरूषों पर निर्भर है?
6. क्या सामाजिक जीवन में आपके निर्णय किसी पुरूष द्वारा प्रभावित है?
7. क्या आप अपने परम्परागत कार्य को छोड़कर नया व्यवसाय करना चाहते है?

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर निम्न सारणियों द्वारा प्राप्त किया गया है–

तालिका–1

महिला उत्तरदाताओं के व्यवसाय का विवरण

क्र0सं0	**उत्तरदाता महिलाओं का व्यवसाय**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1	गृहणी	32	64 प्रतिशत
2	कृषि कार्य / मजदूरी	6	12 प्रतिशत
3	नौकरी / व्यवसाय	12	24 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अभी भी 64 प्रतिशत महिलायें गृहणी की भूमिका में है जबकि 24 प्रतिशत महिलायें नौकरी / व्यवसाय के कार्यों में लगी है।

तालिका–2

महिला उत्तरदाताओं के परिवारों के पास एल0पी0जी0 के व्यवस्था का विवरण

क्र0सं0	**उत्तरदाता के पास एल0पी0जी0 की व्यवस्था**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1	हाँ	34	68 प्रतिशत
2	नहीं	16	32 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 68 प्रतिशत परिवारों में एल0पी0जी0 कनेक्शन है जिसके कारण परम्परागत रूप से खाना बनाने के स्थान पर रसोईघर का प्रयोग हो रहा है। जिसका प्रभाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ा है जबकि 32 प्रतिशत परिवार अभी भी एल0पी0जी0 से वंचित है।

तालिका–3
महिला उत्तरदाताओं के बैंक एकाउंट की व्यवस्था का विवरण

क्र0सं0	उत्तरदाता के पास बैंक एकाउंट	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	29	58 प्रतिशत
2	नहीं	21	42 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 58 प्रतिशत महिलाओं के पास अपने बैंक अकाउंट है जबकि 42 प्रतिशत महिलायें अभी भी बैंक से दूर है।

तालिका–4
महिला उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर का विवरण

क्र0सं0	उत्तरदाता का शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	शिक्षित	36	72 प्रतिशत
2	अशिक्षित	14	28 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 72 प्रतिशत महिलायें शिक्षित है जबकि 28 प्रतिशत महिलायें अशिक्षित है।

तालिका–5
महिला उत्तरदाताओं की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुरूषों पर निर्भरता का विवरण

क्र0सं0	उत्तरदाता की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुरूषों पर निर्भरता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	37	74 प्रतिशत
2	नहीं	13	26 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 74 प्रतिशत महिलाओं की आर्थिक निर्भरता पुरूषों के ऊपर है जबकि 26 प्रतिशत महिलायें आर्थिक रूप से स्वतन्त्र है।

तालिका–6
महिला उत्तरदाताओं के सामाजिक जीवन के निर्णयों पर पुरूषों के प्रभाव का विवरण

क्र0सं0	उत्तरदाताओं के सामाजिक जीवन के निर्णयों पर पुरूषों के प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	40	80 प्रतिशत
2	नहीं	10	20 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत महिलाओं के सामाजिक जीवन के निर्णयों पर पुरूषों का प्रभाव देखा जाता है। जबकि 20 प्रतिशत महिलाऐं अपने आपको सामाजिक रूप से स्वतन्त्र मानती हैं।

तालिका–7
महिला उत्तरदाताओं के द्वारा परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नया व्यवसाय अपनाने की इच्छा का विवरण

क्र0सं0	उत्तरदाताओं के द्वारा परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नया व्यवसाय अपनाने की इच्छा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	33	66 प्रतिशत
2	नहीं	17	34 प्रतिशत
	कुल उत्तरदाता	**50**	**100 प्रतिशत**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 66 प्रतिशत महिलायें परम्परागत व्यवसाय को छोड़ना चाहते है जबकि 34 प्रतिशत महिलायें अपने परम्परागत व्यवसाय से संतुष्ट है।

विश्लेषण

1. व्यवसायिक आधार पर स्पष्ट हुआ है कि 64 प्रतिशत महिलायें गृहणी के रूप में कार्यरत है जबकि 24 प्रतिशत महिलायें घर से बाहर नौकरी या अपना व्यवसाय करते हैं।
2. घरेलू जीवन में परिवर्तन का आधार बनने वाली एल0पी0जी0 का 68 प्रतिशत महिलायें लाभ ले रही है जबकि 32 प्रतिशत महिलायें अभी भी एल0पी0जी0 से वंचित है।
3. जन धन योजना के बाद भी केवल 58 प्रतिशत महिलायें ही बैंक से जुड़ी है जबकि 42 प्रतिशत महिलायें अभी भी बैंक से दूर हैं।

4. साक्षरता के आधार पर बाती की जाये तो 72 प्रतिशत महिलायें साक्षर है जबकि 28 प्रतिशत महिलायें अशिक्षित है।
5. आर्थिक क्षमता की बात की जाये तो 26 प्रतिशत महिलायें अपने आपको आर्थिक रूप से सक्षम मानती है जबकि 74 प्रतिशत महिलायें अभी भी आर्थिक रूप से पुरूषों पर निर्भर है।
6. 80 प्रतिशत महिलाओं के सामाजिक जीवन के निर्णयों पर पुरूषों का प्रभाव देखा गया है जबकि 20 प्रतिशत महिलायें सामाजिक रूप से अपने आपको स्वतन्त्र मानती है।
7. 66 प्रतिशत महिलायें अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ना चाहती है जबकि 34 प्रतिशत महिलायें अपनी परम्परागत स्थिति से सन्तुष्ट है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत क्षेत्रीय कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि चयनित गाँव की 24 प्रतिशत महिलाऐं रोजगार से जुड़ी है जबकि 72 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर है जो वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में महिलाओं की उद्यमशीलता में वृद्धि को दर्शाता है जो भारतीय समाज हेतु भी शुभ संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Farmers India : Women in India agriculture farmers India hlogrpot.com/2011/04/w. . .

India society Archives- Important India : www.Importantindia.com/category/india. . .

Native American Gender Roles : Plains Humanities Alliance Plains Humanities, Uni. edu./encyclopedia. . .

Pandey, Mrinal, 1996 : Paridhi Parstree Radha Krishna Prakashan, New Delhi.

Sharma Kshama 2001: Streeka Samay Megha Books, Delhi.

Women in India : Wikipedia, the frecencylopedia.

Women in India's construction industry/wiego weigo.org.> home>informal economy>occupational>groups> other groups? construction workers.